**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 10, October - 2022 Publication Date: 31/10/2022

DOIs:10.2018/SS/202210001 --:-- Research Article

# आर्थिक साक्षरता एवं इसके आयाम: मापन की एक समीक्षात्मक अध्ययन

**[1] धर्म बीर पटेल, [2] डॉ पायल बनर्जी**
[1] वरिष्ठ शोध छात्र, शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
[2] सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
Email - [1] dharm1990veer@gmail.com, [2] payel.ggv@gmail.com

**सारांश:** प्रस्तुत अध्ययन में आर्थिक साक्षरता एवं इसके आयाम की एक समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है। समीक्षा के उपरांत पाया गया कि आर्थिक साक्षरता से तात्पर्य आर्थिक साक्षरता से तात्पर्य लोंगों की मुलभुत आर्थिक अवधारणाओं को पहचानने और प्रयोग करने की क्षमता से है और साथ ही अपनी खुशहाली के लिए आर्थिक सोच विकसित करने से है। यह एक प्रकार का ज्ञान है जो आर्थिक मुद्दों से सम्बंधित कार्य को करने की दक्षता के लिए आवश्यक है और मुद्रा, व्यवसाय एवं आर्थिक अवधारणाओं पर परिचर्चा करने के लिए तार्किकता भी प्रदान करती है। साथ ही शोध समीक्षा से ज्ञात हुआ कि आर्थिक साक्षरता का महत्त्व प्रत्येक व्यक्तिगत द्वारा किये गये विकल्पों के चयन के निर्णय सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है क्योंकि व्यक्तिगत घरेलु ऋण, बैंकों सहित अन्य वित्तीय मध्यस्थों के आय व्यय अर्थव्यवस्था के संतुलन पत्रों में केन्द्रीय भूमिका निभाती है। आर्थिक साक्षरता के विभिन्न आयामों यथा: दुर्लभता, उत्पदाकीय संसाधन, आर्थिक प्रणाली, विनिमय, आर्थिक प्रोत्साहन, बाजार और आर्थिक प्रबंधन के मापन हेतु प्रयुक्त विभिन्न उपकरणों का पता लगाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है।

**मुख्य शब्द:** आर्थिक आर्थिक साक्षरता, आयाम एवं मापन ।

## 1. प्रस्तावना:

विश्व के सम्बन्ध में विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि आर्थिक मामले व्यक्तियों के जीवन और अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है **(Kotte & Witt] 1995)**। दुनिया भर के आर्थिक लेनदेन ही प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर पर काबू - पा लिया है, जो अर्थशास्त्र के रूप में विश्व व्यापार और राष्ट्रीय बजट से लेकर व्यक्तिगत बटुए तक को भी प्रभावित कर रहा है **(Merwe, 2012)**। **Farrel (1999)** ने बताया है कि अर्थशास्त्र हमें उन मुद्दों पर अन्तर्दृष्टि प्रदान करती है जो हमें श्रमिक, उपभोक्ता, बचतकर्ता, निवेशक और तार्किक मतदाता के रूप में प्रभावित करते हैं। आर्थिक तर्क हमें गैरस्पष्ट लागतों और विभिन्न नीतियों के - लाभ को देखने योग्य बनाती है**(Stigler, 1983)**। अर्थशास्त्र सीमित संसाधनों के वैकल्पिक उपयोगों को समझने के बारे में है एवं सभी दुर्लभ साधनों के बीच में इस प्रकार विनिमय करने को प्रेरित करती है जहाँ हम वो सब कुछ प्राप्त नही कर सकते हम जो कुछ भी पाना चाहते हैं। दुसरे शब्दों में, जहाँ हमारी सारी इच्छायें पूर्ण नहीं हो सकती हैं **(Koshal et al., 2008)**। इन इच्छाओं की पूर्ति हेतु, उत्पादक और उपभोक्ताओं को अपने आय की मात्रा और आय का उपयोग हेतु आर्थिक गतिविधियों के सम्बन्ध में तार्किक निर्णयों की आवश्यकता होती है **(Pierre & Williams, 1954)**। **Lusardi (2008)** ने सुझाव दिया है कि वयस्क जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा वित्त की कमी और कमजोर मुद्रास्फीति, विविधिकरण जोखिमों, ब्याज संरचना और अन्य ऋण साधनों सहित सबसे बुनियादी आर्थिक अवधारणाओं में स्वयं को कमजोर महसूस करते हैं। इन बुनियादी अवधारणाओं से परिचित कराने के लिए लोंगो से इनके महत्व पर प्रश्न पूछे जाने चाहिए। **Jappelli (2009)** ने कहा है कि हाल के आर्थिक संकटों के चलते वित्तीय झटकों को सहन करने के लिए आवश्यक वित्तीय ज्ञान की कमी वाले लोग अकल्पनीय जोखिमों का सामना करते हैं। ये जोखिम विशिष्ट रूप से सीमित बचत करने वाले अथवा कम आय वाले घरों से आने वाले व्यक्तियों के लिए ज्यादा गंभीर है। हमारी अर्थव्यवस्था में रोजमर्रा की उथलपुथ-ल से लोगों को अधिक जोखिम उठाना पड़ रहा है। ऐसे में तेजी से बदलाव के लिए खुद को तैयार करने की जरुरत है। जिसके लिए आर्थिक साक्षरता की आवश्यकता अन्य प्रकार की साक्षरता से ज्यादा है **(Farrel, 1999)**।

## 2. आर्थिक साक्षरता का अर्थ:

आर्थिक साक्षरता से तात्पर्य लोंगों की मुलभुत आर्थिक अवधारणाओं को पहचानने और प्रयोग करने की क्षमता से है और साथ ही अपनी खुशहाली के लिए आर्थिक सोच विकसित करने से है **(Mathews, 1999)**। दुसरे शब्दों में यह एक प्रकार का ज्ञान है जो आर्थिक मुद्दों से सम्बंधित कार्य को करने की दक्षता के लिए आवश्यक है और मुद्रा, व्यवसाय एवं आर्थिक अवधारणाओं पर

परिचर्चा करने के लिए तार्किकता भी प्रदान करती है **(Kotte & Witt, 1995)**। आर्थिक साक्षरता संगठन **(2011)** के अनुसार आर्थिक साक्षरता के दो महत्वपूर्ण पहलु है-

पहला पहलु आर्थिक साक्षरता प्रोत्साहनों के महत्त्व को पहचानने, विनिमय को समझने एवं अप्रत्याशित परिणामों को सम्मिलित करते हुए सार्वजनिक नीति के पूर्ण प्रभावों की प्रत्याशा को आर्थिक रूप से चिंतन करने का ज्ञान देता है। वहीं दूसरा पहलु बाजार बलों को समझने अथवा मौद्रिक तंत्र किस प्रकार कार्य करते हैं? जैसे मौलिक अवधारणाओं के साथ परिचित होने से है। इनके अनुसार निजी वित्तीय साक्षरता को आर्थिक साक्षरता के एक भाग के रूप में माना गया है।

अतः आर्थिक साक्षरता का प्रयोग लोंगों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले बलों को समझने में किया जाता है इस रूप में आर्थिक साक्षरता समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है **(Farrel, 1999)**।

### 3. आर्थिक साक्षरता का महत्त्व:

**Jappelli (2009)** ने अपने अध्ययन में बताया है कि आर्थिक साक्षरता सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण योगदान देता है। उन्होंने आर्थिक साक्षरता से प्रभावित होने वाले तीन पहलुओं को शामिल कर आर्थिक साक्षरता के महत्व को बताया है-

1.संपत्ति:

चूँकि वित्तीय उत्पादें असाधारण रूप से जटिल हो चुके हैं इसलिए परिसम्पत्तिओं के सम्बन्ध में आर्थिक साक्षरता बहुत महत्त्वपूर्ण है । इनकी जटिलता और भी बढ़ जाती है जब कई विकल्पों के बीच हमें निर्णय लेना हो। शेयर बाजार की अत्यधिक सहभागिता और नीतिगत बदलाओं के परिणामस्वरुप विभिन्न देशों में अधिकतर परिवारों को वित्तीय जोखिम का सामना करना पड़ता ळें घटिया जोखिम विविधिकरण, अक्षम पोर्टफोलियो आवंटन और बचत के निम्न स्तर आर्थिक साक्षरता की कमी से सम्बंधित हैं।

2.कर्ज:

आज दुनिया के लगभग सभी देशों में क्रेडिट कार्ड धारकों एवं ऋणकर्ताओं की संख्या में वृद्धि हुयी है वैश्विक मंदी 2008 के उपरांत देखा गया है व्यक्तिगत निवेशकों और उधारकर्ताओं द्वारा किये गये विकल्पों के चयन के निर्णय सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है क्योंकि व्यक्तिगत घरेलु ऋण, बैंकों सहित अन्य वित्तीय मध्यस्थों के आय व्यय की संतुलन पत्रों में केन्द्रीय भूमिका निभाती है। इस प्रकार की संस्थाओं की दिवालियापन होने का मुख्य कारण लोंगों में आर्थिक निरक्षरता का व्याप्त होना पाया गया है।

3.समष्टि:

धोखाधड़ी युक्त वित्तीय क्रियाएं और वित्तीय बाजारों में अनुचित प्रतिस्पर्धा वित्तीय निरक्षरता का ही परिणाम है। शिक्षित और अच्छी तरह अवगत वित्तीय उपभोक्ता अपने विश्वास को बढ़ाकर और बाजार से धूर्त उत्पादों को बलपूर्वक बाहर निकालकर ही वित्तीय बाजारों में सुधार कर सकता है।

आर्थिक साक्षरता किसी देश में बचत के अधिक कुशल आवंटन और निवेश को आकर्षित कर वित्तीय विकास को प्रभावित करती है। शेयर बाजार में उच्चतर भागीदारी और वित्तीय बाजार की समझ उच्च आर्थिक साक्षरता से प्रेरित होती है। आर्थिक साक्षरता बाजार आधारित अर्थव्यवस्था में आत्मविश्वास निर्माण, वित्तीय मध्यस्थों का विनियमन और विकास के लिए बेहतर नीतिगत वातावरण बनाने में मदद करती है। **Jappelli (2009)** ने अपने अध्ययन में यह भी पाया है कि निवेश और उधार लेने के निर्णय में आर्थिक साक्षरता सभी परिवारों के लिए अधिक महत्वपूर्ण है।

आज बहुत से युवाओं और वयस्कों में आर्थिक ज्ञान का अभाव होने से उन्हें एक बेहतर उपभोक्ता, उत्पादक, बचतकर्ता, निवेशक और कुशल कार्यबल का सदस्य बनने से रोकती है, ऐसे में आर्थिक साक्षरता उन्हें आर्थिक रूप से बेहतर बनाने में एक उपकरण का कार्य करती है (**Mathews, 1999**)। प्रायः देखा गया है कि आर्थिक रूप से अशिक्षित लोग आर्थिक बलों के बारे में भ्रमित भी होते हैं उन्हें यह भी नहीं पता होता है उनके आर्थिक निर्णय उन्हें ही किस रूप में प्रभावित करते हैं तथा इस सम्बन्ध कौन से प्रश्न व्यवस्था से करनी है और उसके उत्तर कहाँ से प्राप्त करनी है **(Koshal et al-, 2008)**। **Jappelli (2009)** ने यह भी प्रमाण दिया है कि प्रत्येक परिवारों में आर्थिक साक्षरता का स्तर भिन्नभिन्न है। कम शिक्षित और गरीब जनसांख्यिकीय समूह आर्थिक - साक्षरता के निम्न स्तर को दर्शाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप बाजार में निरंतर विफलताएं आती हैं। आर्थिक साक्षरता के निम्न स्तर होने का मुख्य कारण अर्थशास्त्र शिक्षा के अभाव का परिणाम है **(Mathews, 1999)**। वित्तीय ज्ञान प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रोत्साहनों का सहारा लेकर आर्थिक साक्षरता को सुधारा जा सकता है **(Jappelli, 2009)**। इन सुधारों के आधार पर मानव पूँजी में वृद्धि की उम्मीदें लम्बे समय तक की जा सकती है **(Kotte & Witt, 1995)**।

कुल मिलाकर आर्थिक साक्षरता को निर्णय निर्माता की खुशियों में वृद्धि करने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है ताकि वे आधारभूत आर्थिक अवधारणाओं की समझ और प्रयोग द्वारा सटीक निर्णय ले सकें **(Merwe, 2012)**।

### 4. आर्थिक साक्षरता का मापन:

आर्थिक साक्षरता को मापने के लिए वर्षों से विभिन्न परीक्षण उपकरणों का विकास किया गया है। फिर भी आज के समय में भी विद्यार्थियों की आर्थिक साक्षरता को मापने के लिए मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है इस ओर सर्व्प्रथम ध्यान देकर संयुक्त राज्य अमेरिका में अर्थशास्त्र शिक्षा पर राष्ट्रीय परिषद् **(NCEE)** ने आर्थिक साक्षरता को मापने के लिए चतुर्थ-ग्रेड स्तरीय विशिष्ट मानकीकृत परीक्षण विकसित किये। इसके अलावा टेस्ट ऑफ अंडरस्टैंडिंग कॉलेज इकोनॉमिक्स (TUCE( **)Saunders Fels & Wels , 1981)**, बेसिक इकॉनोमिक टेस्ट (BET( **)Chizmar & Halinski, 1983)**, टेस्ट ऑफ इकॉनोमिक नॉलेज )TEK) और टेस्ट ऑफ इकॉनोमिक लिटरेसी (TEL( **)Soper, 1979)** भी सम्मिलित है।

**TUCE** में व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र से सम्बंधित दो अलग-अलग परीक्षण है। इस परीक्षण में बहुविकल्पीय पदों का समावेश है (**Walstad & Rebeck, 2008**)। इसमें संज्ञानात्मक विशिष्टताओं के अंतर्गत पहचान, समझ, सरल अनुप्रयोग और जटिल अनुप्रयोग शामिल है (**Chizmar & Halinski, 1983**)। **TUCE** का पहला उपयोग कॉलेज स्तर पर परिचयात्मक अर्थशास्त्र के शिक्षण प्रयोगों को मापने के लिए किया गया। दूसरा उपयोग विभिन्न कॉलेजो और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के प्रदर्शन की तुलना करने के लिए किया गया है (**Walstad & Rebeck, 2008**)। दूसरी ओर BET अर्थशास्त्र के बुनियादी सिद्धांतों का एक उपलब्धि परीक्षण है जिसका उद्देश्य चौथी से छठवीं ग्रेड के छात्रों की अर्थशास्त्र उपलब्धि का परीक्षण करना है (**Chizmar & Soper, 1981)**। इसमें संज्ञानात्मक स्तर के कुल तीन वर्गीकरण- ज्ञान, समझ और अनुप्रयोग सम्मिलित है। इसी प्रकार जम्ज्ञ ग्रेड सातवीं से नवीं तक के विद्यार्थियों के आर्थिक ज्ञान को मापने के लिए बहुविकल्पीय पदों का मानकीकृत परीक्षण है (**NCEE, 2007)**। **Walstad & Soper (1988)** ने बहुविकल्पीय प्रश्नों पर आधारित बुनियादी आर्थिक समझ से सम्बंधित मानकीकृत प्री और पोस्ट **TEL** परीक्षण तैयार किया, इसमें संज्ञानात्मक स्तर पर कुल सात आर्थिक अवधारणाओंआधारभूत आर्थिक समस्या -, आर्थिक प्रणाली, व्यष्टि अर्थशास्त्र, समष्टि अर्थशास्त्र, विश्व अर्थव्यवस्था, आर्थिक संस्थानों और मूल्यांकन अवधारणायें सम्मिलित है। वही **Walstad & Soper (1981)** के अनुसार तैयार **TEL** में इन्ही अवधारणाओं को पाँच स्तरों- ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण और मूल्यांकन पर शामिल किया गया है।

तालिका क्रमांक-01
आर्थिक साक्षरता एवं इसके आयामों के मापन से सम्बंधित महत्वपूर्ण शोध साहित्यों की समीक्षा

| क्र. संख्या | शोधार्थियों के नाम | शोध वर्ष | आर्थिक साक्षरता के आयाम | मापन उपकरण |
|---|---|---|---|---|
| **01.** | Saunders] Fels & Wels | 1981 | आधारभूत आर्थिक समस्या , आर्थिक प्रणाली, व्यष्टि अर्थशास्त्र | टेस्ट ऑफ अंडरस्टैंडिंग कॉलेज इकानामिक्स ¼TUCE½ |
| **02** | Chizmar & Halinski] | 1983 | ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण और मूल्यांकन | बेसिक इकॉनोमिक टेस्ट ¼BET½ |
| **03** | Soper | 1979 | आधारभूत आर्थिक समस्या , आर्थिक प्रणाली, व्यष्टि अर्थशास्त्र, समष्टि अर्थशास्त्र , विश्व अर्थव्यवस्था, आर्थिक संस्थानों और मूल्यांकन | टेस्ट ऑफ इकानामिक नॉलेज ¼TEK½ और टेस्ट ऑफ इकानामिक लिटरेसी ¼TEL½ |
| **04** | Walstad & Rebeck | 2008 | व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र | TUCE |
| **05** | NCEE | 2007 | व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र | चतुर्थ ग्रेड स्तरीय विशिष्ट मानकीकृत परिक्षण |
| **06** | Banaszak | 1987 | दुर्लभता, उत्पदाकीय संसाधन, आर्थिक प्रणाली, विनिमय, आर्थिक प्रोत्साहन, बाजार, आर्थिक प्रबंधन | TEL |

उपरोक्त शोध साहित्यों के अध्ययन के उपरांत आर्थिक साक्षरता को मापने के लिए यद्यपि जो भी मानकीकृत परीक्षण पाया गया, भारतीय सन्दर्भ में खासतौर से छत्तीसगढ़ राज्य विशेष के विद्यार्थियों हेतु उपयुक्त नहीं पाया गया। शोधार्थी द्वारा इन प्रमापीकृत परीक्षणों के विषयव-स्तु और छत्तीसगढ़ राज्य विश्वविद्यालयों के स्नातक स्तरीय अर्थशात्र पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत पाया कि प्रमापीकृत परीक्षण की विषयवस्तु इससे अधिक कठिनाई स्तर के हैं।- **Kotte & Witt (1995)** ने भी यह माना है कि ये सभी प्रमापीकृत परीक्षण अंतर्राष्ट्रीय तुलना के लिए उपयुक्त नहीं हैं। बल्कि इसके लिए उस देश में आर्थिक साक्षरता को प्रभावित करने

वाले कारकों की जाँच कर आर्थिक साक्षरता के आयामों का निर्धारण करना चाहिए। इस सन्दर्भ में **Merwe (2012)** ने आर्थिक साक्षरता को प्रभावित करने वाले 6 कारकों को चिन्हित किया है, वे इस प्रकार हैं-

**चित्र संख्या-01** आर्थिक साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारक

**Kotte & Witt (1995), Merwe (2012)** और **Patel (2017)** ने **Banaszak (1987)** के सुझावों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक साक्षरता के परीक्षण हेतु अर्थशास्त्र शिक्षा में कुल सात मूलभुत आर्थिक अवधारणाओं को सम्मिलित किया जाना अनिवार्य है, वे अवधारणायें निम्न है:

- **चित्र संख्या-02** अर्थशास्त्र शिक्षा में मूलभुत आर्थिक अवधारणायें

## 5. निष्कर्ष:

उपरोक्त शोध अध्ययनों कि समीक्षा के उपरांत शोधार्थी ने पाया कि प्रत्येक देश में आर्थिक साक्षरता उस देश की आर्थिक आवश्यकताओं, क्रियाओं और प्रभावित करने वाले कारकों से निर्धारित होती है। इसके मापन की कोई ऐसी प्रमापिकृत उपकरण नही है। अन्तराष्ट्रीय तुलना हेतु प्रयुक्त हो सके सर्वोत्तम यह होगा कि सर्वप्रथम आर्थिक साक्षरता को परिभाषित करते हुए उसके

आयामों को चिन्हित किया जाय। नागरिकों को आर्थिक रूप से साक्षर होने में सरकार की भी भूमिका और नियत भी बहुत मायने रखती है, इसके लिए सरकार और इसके तमाम वित्तीय संगठनों बैंक, इत्यादि समय-समय पर जागरूकता कार्यक्रम चलायें।

## सन्दर्भ सूची:

1. Banaszak, R. A. (1987). The Nature of Economic Literacy. *ERIC Digest*, (41): 284 823
2. Chizmar, J.F., & Halinski, R.S. (1983). Performance in the "Basic Economic Test" (BET) and "Trade-Offs". *The Journal of Economic Education*, 14(1): 18-29.
3. Chizmar, J.F., & Halinski, R.S., (1981). *Basic Economic Test: Examiner's Manual*. Second Edition.Joint Council on Economic Education. New York.
4. Chizmar, J.F., & Soper, J.C. (1981). Specification and Development of New Pre-College Test: BET and TEL. *The American Economic Review*, 71(2): 195-199.
5. Farrell, C., (1999). *We're All Economists*. Proceedings of the Economic Literacy Symposium, 13 May.
6. Jappelli, T. (2009).*Economic Literacy: An international Comparison. Centre for Studies in Economics and Finance*. Working Paper no. 238, p1-37
7. Koshal, R.K., Gupta, A.K., Goyal, A., & Choudhary, V.N. (2008).Assessing Economic Literacy of Indian MBA Students.*American Journal of Business*, 23(2): 43-49.
8. Kotte, D., & Witt, R. (1995).*Chance and Challenge: Assessing Economic Literacy*. Technical University Dresden School of Economics.p159-168.
9. Lusardi, A. (2008). *Financial Literacy: An Essential Tool for Informed Consumer Choice?*Dartmouth College, Harverd Business School, and NBER.p1-29.
10. Mathews, L.G. (1999). *Promoting Economic Literacy: Ideas for Your Classroom. Proceedings of the annual meeting of the American Agricultural Economics Association*. Nashville, Tennessee, UnitedStates of America, 8-11 August 1999, p1-12
11. Van der Merwe, E. (2012). Economic literacy as a factor affecting allocative efficiency. M.Sc. Thesis, Department of Agricultural Economics, University of the Free State, Bloemfontein.
12. National Council on Economic Education (NCEE) (2007).http://www.p21.org/route21/index.php?option=com_jlibrary&view=details&id=374&Itemid=179.Accessed [12 May 2015].
13. Pierce, W.H., & Williams, M.S. (1954). Some Bases for and Objectives of Farm Management Extension Work.*Journal of Farm Economics*, 36(3): 512-517.
14. Saunders, P., Fels, R., & Welsh, A.L. (1981).The Revised Test of Understanding College Economics.*The American Economic Review*, 71(2): 190-194.
15. Soper, J.C. (1979). *Test of Economic Literacy: Discussion Guide and Rationale*. Joint Council on Economic Education, New York.p1-58.
16. Soper, J.C., & Brenneke, J.S. (1981).The Test of Economic Literacy and an Evaluation of the DEEP System.*The Journal of Economic Education*, 12(2): 1-14.
17. The Organization for Economic Literacy (2011): www.econliteracy.org Assessed [9 May 2015].
18. Walstad, W., & Rebeck, K. (2008).The Test of Understanding of College Economics. *American Economic Review: Papers and Proceedings*, (98)2: 547-551.
19. Walstad, W.B., & Buckles, S. (1983). The New Economics Test for the College and Pre-College Levels: A Comment. *The Journal of Economic Education*, 14(2): 17-23.
20. Walstad, W.B., & Larsen, M.A., (1992). *A national survey of American Economic Literacy. National Center for Research in Economic Education.* University of Nabraska-Lincoln..
21. Walstad, W.B., & Soper, J.C., (1988). A Report Card on the Economic Literacy of U.S. High School Students.*American Economic Review*, 7(2): 251-256.
22. Yunus, K.Y., Ishak, S., Jalil, N.A. (2010). Economic literacy amongst the secondary school teachers in Perak Malaysia. *Information Management and Business Review*, 1(2): 69-78.